पद १५३

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

नंद मुकुंद मुरारि सांवळा गोकुळांत हरी आला हो।।ध्रु.।। कारागृही अवतार घेतला। देविकच्या उदरा आला हो। कंस दुष्ट पापिष्ट

जिवाला। कष्टी मनामध्यें झाला हो।।१।। घेउनि कडे वसुदेव निघाला। मध्यरात्रीं समयाला हो। यमुना जल कल्लोळ हरीच्या। स्पर्श करी चरणाला हो।।२।। घन:श्याम श्रीकृष्ण छबेला। रंगेला अलबेला हो। अलाबला किती घेती नाचती। करती घरो-घरीं काला हो।।३।। वासुदेव गिरिधारी कन्हैय्या मोहन मुरलीवाला हो। माणिक म्हणे प्रभू शरण तया जा। ध्याती मुनिजन ज्याला हो।।४।।